पाठ-2

देश की सुरक्षा एवं विदेश नीति

स्वतंत्रता के बाद देश की आजादी को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक था कि देश की सैन्य-शक्ति को मजबूत किया जाय। आजादी के तुरन्त बाद पाकिस्तान द्वारा किए गए आक्रमण ने हमें और सतर्क कर दिया। अतः सेना को आधुनिक बनाने, सैन्य बल की संख्या बढ़ाने तथा सेना की नई जरूरतों को पूरा करने के लिए सैन्य अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए गए। विश्व में हथियारों की होड़ ने देश को आधुनिक हथियारों के विकास के लिए मजबूर किया जिससे परम्परागत युद्ध प्रणाली के साथ-साथ युद्ध के नए तरीकों तथा सुरक्षा के प्रबन्ध किए गए। सेना के तीनों अंगों- थल सेना, जल सेना एवं वायु सेना को अधिक शक्तिशाली बनाया गया।

सैन्य संगठन

भारतीय सेना का सर्वोच्च सेनापति (कमाण्डर) राष्ट्रपति है, किन्तु देश की वास्तविक सुरक्षा का दायित्व मंत्रिमण्डल पर होता है। मंत्रिमण्डल की ओर से रक्षा सम्बन्धी मामलों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक उच्च स्तरीय समिति है जिसका अध्यक्ष प्रधानमंत्री होता

है। रक्षामंत्री और रक्षा मंत्रालय इसके कार्य का संचालन करता है और सेना के तीनों अंगों के कार्यों की निगरानी रखता है।
आपने गणतंत्र दिवस के अवसर पर टेलीविज़न में सेना के तीनों अंगों यथा-जल सेना, थल सेना एवं वायु सेना को मार्चपास्ट करते देखा होगा। आइए अपने देश की सेनाओं को जानें-

हमारी सेनाएँ (सभी का मुख्यालय दिल्ली)

भारतीय थल सेना पाँच कमानों में विभाजित है। पश्चिमी, पूर्वी, दक्षिणी, उत्तरी और केन्द्रीय कमान। थल सेना में कई प्रकार की सेनाएँ हैं जैसे- इन्फेन्ट्री, तोपखाना, आर्मी, मेडिकल कोर, आर्मी शिक्षा कोर आदि।	भारतीय नौसेना को जल सेना भी कहते हैं, यह तीन कमानों में विभाजित है। पश्चिमी कमान, पूर्वी कमान और दक्षिणी कमान। नौसेना के भारत में दो बेड़े हैं- पूर्वी बेड़ा और पश्चिमी बेड़ा।	भारतीय वायु सेना में इस समय चार कमानें हैं। पश्चिमी वायु कमान, पूर्वी वायु कमान, प्रशिक्षण कमान और रख - रखाव कमान।

इन्हें जानिए-

- थल सेनाध्यक्ष को जनरल कहते हैं।
- नौ-सेनाध्यक्ष को एडमिरल कहते हैं।
- वायु सेनाध्यक्ष को एयरचीफ मार्शल कहते हैं।

इन सशस्त्र सेनाओं में भारत का कोई भी नागरिक भर्ती हो सकता है महिलाओं को भी अल्प अवधि वाले सेना कमीशन में भर्ती किया जाता हैं। जिन शाखाओं में महिलाओं की भर्ती की जा सकती हैं उनमें से कुछ इस प्रकार हैं -

लड़ाकू जलपोत	**टैंक**	**लड़ाकू जहाज**

1. थलसेना की सिगनल्स, सेवा कोर, इंजीनियर्स शिक्षा कोर, आयुध कोर तथा गुप्तचर शाखा में।
2. नौसेना की सभी शाखाओं में।
3. वायु सेना की उड़ान, वैमानिकी, इंजीनियरी, शिक्षा प्रशासन, लेखा तथा मौसम विभाग में।

सेना में भर्ती होने के लिए पहले एक चयन परीक्षा ली जाती है। इसमें उत्तीर्ण होने पर उनको प्रशिक्षित किया जाता है। सैन्य प्रशिक्षण के लिए देश में अनेक प्रशिक्षण संस्थान हैं। इनमें से नेशनल डिफेन्स अकादमी, इण्डियन मिलिट्री अकादमी, आफीसर्स टे[a]निंग अकादमी और नेशनल डिफेन्स कालेज मुख्य हैं।

अब्दुल कलाम

आधुनिक युग में नए-नए अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग होने लगा है। दूरगामी मिसाइलों तथा परमाणु बम के आविष्कारों से आक्रमणों का खतरा और भी अधिक बढ़ गया है। भारत ने भी परमाणु बम बनाने की क्षमता प्राप्त कर ली है तथा अनेक प्रकार की मिसाइलें तैयार की हैं।

इनका उद्देश्य आक्रमण के समय अपने देश की रक्षा करना है। सुरक्षा सम्बन्धी वैज्ञानिक उपकरणों के निर्माण तथा प्रक्षेपास्त्र परीक्षण में डा0 ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम का योगदान उल्लेखनीय है।

डा0 अब्दुल कलाम कौन हैं ? वे किस कार्य के लिए प्रसिद्ध हैं ?

मिसाइल क्या होती है और उसका क्या कार्य है ?

आपके गाँव एवं नगर की सुरक्षा कौन करता है ? लिखिए.....।

जिस प्रकार हम अपने गाँव एवं घर को सुरक्षित रखते हैं उसी प्रकार से देश को सुरक्षित रखने की आवश्यकता पड़ती है जिसके लिए विभिन्न प्रकार के संगठन तैयार किए गए हैं।

आइए समझें-सुरक्षा में सहायक अन्य संगठन

एन0सी0सी0 का एक दृश्य

सेनाओं के उपर्युक्त तीन अंगों के अतिरिक्त कुछ अन्य संगठन हैं, जो देश की सुरक्षा के लिए कार्य करते हैं। देश की अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं पर स्थायी रूप से चौकसी का कार्य सीमा सुरक्षा बल (ठवतकमत ैमबनतपजल थ्वतबम) नामक संगठन करता है। समुद्रतट की सीमाओं की सुरक्षा में तटरक्षक (ब्वंेज ळनंतके) संगठन कार्य करता है। इसके कार्यों में रक्षा प्रतिष्ठानों की रक्षा करना, तस्करी रोकना तथा खोज-बचाव के दलों का गठन करना मुख्य हैं। तीसरा महत्वपूर्ण संगठन प्रादेशिक सेना (ज्मततपजवतपंस ।तउल) है। यह नागरिकों का एक संगठन है। इसमें देश की सुरक्षा कार्य में भाग लेने के इच्छुक नागरिक अपने खाली समय में सैन्य प्रशिक्षण ले सकते हैं। चौथा संगठन नेशनल कैडेट कोर (एन. सी. सी.) है। इसमें बालकों के साथ-साथ बालिकाओं का भी डिवीज़न है। एन0सी0सी0 का प्रशिक्षण विश्वविद्यालय, स्नातक उपाधि कालेजों, महाविद्यालयों तथा अन्य स्कूल कालेजों में दिया जाता है। इसी प्रकार उच्च प्राथमिक विद्यालयों में स्काउट्स एवं गाइड्स के प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

शान्तिकाल में सेनाओं तथा सहायक संगठनों की आवश्यकता उस समय भी पड़ती है जब देश पर किसी प्रकार का आन्तरिक संकट आता है।

गुजरात में भूकम्प, उड़ीसा में आई बाढ़ तथा अण्डमान एवं निकोबार में सुनामी के समय सैनिकों ने किस प्रकार सहायता पहुँचाई थी ? चर्चा करिए-

.....

नागरिकों के कर्त्तव्य

हमारे सैनिक युद्ध के समय तथा अन्य अवसरों पर देश की सुरक्षा के लिये अपना बलिदान करने को सदा तत्पर रहते हैं। कितने ही सैनिकों ने देश के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए हैं। उनकी वीरता और त्याग की गाथाएँ आज भी सराही जाती हैं।

अतः हम सभी लोगों को सैनिकों का सम्मान करना चाहिए और उनके परिवारजनों के कल्याण के लिए हर प्रकार के उपाय करने चाहिए। युद्ध हमेशा नहीं होता है किन्तु उसका

खतरा तो बना ही रहता है। देश की रक्षा में विघ्न डालने वाले तत्त्वों पर कड़ी निगाह रखने में नागरिकों का सहयोग परमावश्यक है। सैनिकों के सम्मान में प्रत्येक वर्ष 7 दिसम्बर को सशस्त्र सेना झण्डा दिवस मनाया जाता है।

भारत की विदेश नीति

किसी भी देश की विदेश नीति का उद्देश्य अपने देश के हितों की रक्षा करना है। सबसे पहले वह अपने पड़ोसी देशों की ओर देखता है और उनके साथ मित्रता एवम् सहयोग का भाव रखना चाहता है इसके साथ ही वह विश्व के सभी देशों की स्थिति को जानने का प्रयास करता है। उसी के आधार पर अपनी विदेश नीति निश्चित करता है।

द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद भारत स्वतंत्र हुआ। उस समय विश्व दो गुटों में बँट चुका था। एक गुट का नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका तथा दूसरे गुट का नेतृत्व पूर्व सोवियत संघ कर रहा था। दोनों ही गुट अपनी शक्ति बढ़ाने तथा स्वतंत्र राष्ट्रों को अपने गुट में मिलाना चाहते थे।

गुटनिरपेक्षता

विश्व की ऐसी परिस्थिति देखकर हमारी सरकार ने यह अनुभव किया कि बिना किसी गुट में सम्मिलित हुए सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाया जाए। इसलिए भारत ने शांतिपूर्ण एवम् स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने का निश्चय किया। शांतिपूर्ण और स्वतंत्रता की यह विदेश नीति ही गुट निरपेक्षता की नीति में बदल गई।

गुट निरपेक्षता का अर्थ है कि भारत न तो किसी गुट में शामिल होगा और न किसी देश के साथ सैनिक संधियाँ करेगा। वह स्वतंत्र एवम् निष्पक्ष रूप से अपना निर्णय लेकर कार्य करेगा।

पंचशील

देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं0जवाहर लाल नेहरू युद्ध के स्थान पर शांति को महत्व देते रहे। वह सभी राष्ट्रों की स्वतंत्रता एवम् समानता के समर्थक थे इसलिए किसी भी राष्ट्र के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप करने के भी विरुद्ध थे। उनके इन्हीं विचारों से 1954 में पाँच सिद्धान्त बनाए गए जिन्हें पंचशील के नाम से जाना जाता है। ये हमारी विदेशनीति के आधार हैं। ये सिद्धान्त इस प्रकार हैं-

- एक दूसरे की राज्य की सीमा एवम् उनकी प्रभुसत्ता का सम्मान किया जाए
- एक दूसरे के भू-भाग पर आक्रमण न किया जाए।
- एक दूसरे के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप न किया जाए।
- समानता और पारस्परिक लाभ को ध्यान में रखा जाए।
- शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना का पालन किया जाए।

जहाँ हम एक दूसरे देश की एकता एवम् प्रभुसत्ता का सम्मान करते हैं वहीं अपने देश की रक्षा को भी विशेष महत्व देते हैं। भारत की विदेश नीति का यह भी सिद्धान्त है कि

अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का हल शांतिपूर्ण ढंग से हो। हमारा संविधान भी अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने के लिए निर्देशित करता है।
इसके अतिरिक्त भारत ने सदा ही स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले राष्ट्रों का समर्थन किया है। जैसे- दक्षिण अफ्रीका, इण्डोनेशिया, मलाया, अल्जीरिया, अंगोला एवं बांग्लादेश।

निःशस्त्रीकरण की नीति

विश्व में शांति बनाए रखने के लिए हमारे देश ने निःशस्त्रीकरण (शस्त्रों को कम करना) की नीति का समर्थन किया। शस्त्रों की होड़ में युद्ध की सम्भावनाएँ बढ़ जाती हैं। विश्व को विनाश से बचाने के लिए भारत ने आणविक शक्ति का घोर विरोध किया है। भारत का विचार है कि यदि शस्त्र एवं सेना में अधिक व्यय न किया जाए तो विश्व में तनाव कम होगा। इसके अतिरिक्त निःशस्त्रीकरण से जितने धन की बचत होगी उसका उपयोग जनकल्याण के कार्यों में हो सकेगा।
भारत ने परमाणु परीक्षण क्यों किया ? चर्चा करिए-

भारत का संयुक्त राष्ट्रसंघ को सहयोग

भारत जब से संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बना है वह लगातार उसे अपना सहयोग प्रदान कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्देशों के पालन में ही कोरिया के संकट के समय भारत ने डॉक्टरों का एक दल भेजा एवं कांगो में संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ अपनी सैनिक टुकड़ियाँ भेजी थीं।

राष्ट्रकुल

भारत ने प्रायः समस्त देशों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए हैं। भारत स्वयं राष्ट्रकुल का सदस्य है। राष्ट्रकुल ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त हुए ऐसे देशों का संगठन है जिसके सभी सदस्य स्वतंत्र एवम् समान हैं। अपनी आपसी समस्याओं के समाधान के लिए एक दूसरे के साथ सहयोग और मित्रता के भाव से काम करते हैं। वे अपने आंतरिक एवम् बाह्य मामलों में पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं।

दक्षेस (सार्क)

1985 में दक्षिण एशिया के सात देशों से मिलकर दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (दक्षेस) बना। इनका स्थायी कार्यालय काठमाण्डू में है। नवम्बर, 2005 में अफगानिस्तान दक्षेस में सम्मिलित हुआ। अप्रैल 2007 में इसे पूर्ण सदस्य का दर्जा मिला जिससे वर्तमान में दक्षेस की सदस्य संख्या आठ हो गई है।

इसकी स्थापना का उद्देश्य दक्षिण एशिया के लोगों का कल्याण करना, जीवन स्तर सुधारना तथा आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी एवम् वैज्ञानिक क्षेत्र के विकास में पारस्परिक सहयोग देने के साथ ही आपसी विश्वास, समझ और एक दूसरे की समस्याओं के प्रति सहानुभूति रखना है।

आओ जानें दक्षेस के आठ देशों के ध्वजों को-

बांग्लादेश भूटान भारत मालदीव नेपाल पाकिस्तान श्रीलंका अफगानिस्तान

- शब्दावली

परमाणु परीक्षण - परमाणु शक्ति की जाँच के लिए किया जाने वाला प्रयोग परमाणु परीक्षण है।

निःशस्त्रीकरण - विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों का प्रचुर मात्रा में संग्रह न करना निःशस्त्रीकरण है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) देश की सुरक्षा में सहायक संगठनों के बारे में लिखिए।

(ख) विश्व में शांति स्थापित करने के लिए भारत ने किस नीति का समर्थन किया ?

(ग) पंचशील क्या है एवं इसके सिद्धान्त कौन-कौन से हैं ?

(घ) कोरिया और कांगो के संकट के समय भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ की क्या सहायता की ?

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) सेना में भर्ती होने के लिए पहले चयन ..... होती है।

(ख) समुद्री मार्ग से तस्करी रोकने के लिए ..... संगठन कार्य करता है।

(ग) भारतीय सेनाओं का सर्वोच्च कमाण्डर ..... होता है।

(घ) शस्त्रों की होड़ से ..... की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

3. निम्नलिखित कथनों जो सही हों उनके आगे (सही) का चिह्न लगाइए-

(क) भारतीय सेना के तीनों अंगों का मुख्यालय दिल्ली है। ( )

(ख) वायु सेना के अध्यक्ष को एडमिरल कहते हैं। ( )

(ग) महिलाओं को सेना में भर्ती नहीं किया जा सकता। ( )

4. सोचिए और लिखिए-

(क) क्या आप बड़े होने पर सेना में भर्ती होना पसन्द करेंगे ? कारण बताइए।

(ख) आप वायु सेना, नौसेना और थल सेना में से किसमें भर्ती होना चाहेंगे ?

प्रोजेक्ट वर्क

थल सेना, वायु सेना तथा नौसेना से संबंधित -प्रतीक चिह्न, तीनों सेनाओं के सेनाध्यक्षों के नाम, आयुध उपकरणों के चित्र चार्ट पेपर पर लगाकर अपनी कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।